SAFALTA CLASS™

An Initiative by अमर उजाला

उपचारात्मक शिक्षण पिछड़े हुए बच्चों का जब हम निदान करते हैं तो हमारे सामने उनकी कमियाँ आ जाती है। सामान्यत: हमे उन कमियों को दूर करना पड़ेगा। क्योंकि अगर हम उन कमियों को दूर नहीं करेंगे तो बच्चों की प्रगति नहीं होगी। अत: जब अध्यापक बच्चों की कमियों को दूर करके दोबारा से शिक्षण करवाता तो वह उपचारात्मक शिक्षण कहलाता है।

निदान- किसी विषय में छात्रों की असफलता की जानकारी करना निदान कहलाता हैं । प्राय: देखा जाता है कि पढ़ते समय बच्चे अपने स्तर के बच्चों की तुलना में पीछे रह जाते हैं और पिछड़ जाते हैं बच्चों के पिछड़ेपन का कारण ढूंढ़ना ही निदान कहलाता है।

पिछड़ेपन के प्रकार :पिछड़ापन दो तरह से हो सकता है

1. सामान्य पिछड़ापन
2. विषयगत पिछड़ापन

निदान प्रक्रिया के अंग: निदान प्रक्रिया को हम निम्न भागों में बाँट सकते हैं

(1)वर्गीकरण - सबसे पहले हम बच्चों का वर्गीकरण करते हैं। बच्चों का बौद्धिक विकास देखते हुए हम उनका वर्गीकरण कर देते हैं।

(2) कठिनता की प्रकृति का ज्ञान - जो बच्चे पिछड़ रहे है हम उनकी कठिनता को ढूंढ़ते है कि वे क्या कठिनाई महसूस कर रहे हैं।

(3) छात्रों के पिछड़ेपन के कारण- कठिनता की प्रकृति का पता लगने के बाद हम छात्रों के पिछड़ेपन के कारण निकलते हैं। छात्रों की निष्पति पर बहुत सारे तथ्य प्रभाव डालते हैं।

(4)पिछड़ेपन को रोकने के उपाय- छात्रों के पिछड़ेपन के कारण पता लगने के बाद हम उनको दूर करने के लिए उपाय खोजेगे ताकि उनकी समस्याओ को दर किया जा सके।

पिछड़ेपन के कारण :__

(1) बच्चों में शारीरिक दोष होना। उदाहरणार्थ-हकलाना, कम सुनाई देना, नेत्र दोष आदि।

(2) बच्चों में मानसिक न्यूनता का होना।

(3) शिक्षक का व्यवहार अच्छा न होना।

(4) किसी विशेष विषय में अरुचि होना।

(5) बच्चों का गृहकार्य न करना।

(6) बच्चों के संवेगों का कमजोर होना।

उपचारात्मक शिक्षण की विधियाँ:

(1) शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार पर छोटे-छोटे समूहों में बाँटकर उन त्रुटियों को दूर करना ।

(2) कक्षा के छात्रों की त्रुटियों को दूर करके उनका मार्गदर्शन करना।

(3) विद्दार्थियों की त्रुटियों को यदा कदा दूर करना।

उपचारात्मक शिक्षण के उपाय:

(1) यदि विद्दार्थी वाचन के समय त्रुटियाँ करना है तो उसे बार-बार पढ़वाने का अभ्यास करवाना चाहिए

(2) यदि छात्र कक्षा में गलत उच्चारण करते है तो उसको बोलते समय ही तुरंत टोककर सही उच्चारण करवाना चाहिए।

(3) वाचन संबंधित कमियों को दूर करने के लिए ऐसी शिक्षण सामग्री का प्रयोग करना चाहिए जो उनके दैनिक जीवन (Daily Life) से हो।

(4) लेखन संबंधी त्रुटियों को दूर करने के लिए पुस्तक में से देखकर लिखवाना चाहिए। क्योकिं जब बच्चे देख-देख कर लिखेंगे तो उनको मात्राओं का ज्ञान हो जाएगा।

(5) लेखन संबंधी त्रुटियों को दूर करने के लिए श्रुतलेख भी अच्छी विधि है। श्रुतलेख में मिलने वाली गलतियों को बार-बार लिखवाना चाहिए।

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

- 1.शिक्षार्थी की न्यूनताओं और कमज़ोरियों की पहचान करना:-

- A. सही शिक्षण के लिए बहुत आवश्यक है
- B. शैक्षणिक निदान प्रक्रिया का प्रथम चरण है
- C. उपचारात्मक शिक्षण का दूसरा चरण है
- D. भाषा शिक्षक का कर्त्तव्य होता है

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

- 2.निदानात्मक शिक्षण का व्यापक उद्देश्य है

- A. बच्चों की कमज़ोरियों और कारणों का पता लगाना
- B. सार्थक शिक्षण द्वारा भाषा क्षमता में उत्तरोत्तर वृद्धि
- C. बच्चों में निहित कौशलों का उत्तरोत्तर विकास करना
- D. सही उपचार द्वारा शिक्षण को सुदृढ़ बनाना

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

- 3.निम्नलिखित में से कौन सा उपचारात्मक शिक्षण का उद्देश्य है?

- A. छात्रों की अधिगम सम्बन्धी त्रुटियों को दूर करना।
- B. छात्रों की ज्ञान सम्बन्धी त्रुटियों को दूर करके , उनको आने वाले समय मे होने वाले दोषो से मुक्त करना।
- C. छात्रों के दोषपूर्ण आदतों,मनोवृत्तियों को समाप्त करके उनकी अच्छी आदतों को सीखना।
- D. उपरोक्त सभी

- 4.निदानात्मक शिक्षण में शिक्षक के लिए सबसे कम महत्वपूर्ण होगा

- A. त्रुटियों के बारे में विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाए
- B. शिक्षार्थी के साथ अपनी न्यूनताओं का भी पता लगाए
- C. शिक्षण के लिए आत्मीय और सदव्यवहार अपनाये
- D. शिक्षार्थियों की विशेष आवश्यकताओं को उजागर करें

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

- 5.निम्न में से कौन-सा उपचारात्मक शिक्षण का मुख्य उद्देश्य नहीं है?

- A. ऐसी आदतों, कौशलों एवं मनोवृत्तिओं को सीखना जो सीखी जानी चाहिए
- B. गलत ढंग से सीखी गयी अधिगम-सामग्री का पुनः शिक्षण
- C. दूषित मनोवृत्ति एवं त्रुटिपूर्ण आदतों को समाप्त करना
- D. हिंदी भाषा का सही परिवेश उपलब्ध कराना